By:- Sunito Kumari
Dept. of History
J.N.C Madhubani



## राज्य के नीति निर्देशक तत्वों के प्रमुख प्रावधान
## (The main provisions of Directive principle of State)

प्रायः हर संविधान में कुछ आदर्शों का वर्णन कर दिया जाता है। इसी को राज्य को नीति निर्देशक तत्व कहते हैं। ये तत्व किसी भी सरकार के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य करते हैं। संविधान इनका वर्णन नागरिकों के पालन के लिए नहीं होता। इनका संबंध केवल राज्य के लिए होता है। ये राज्य का ध्यान अपने कर्तव्य को तरफ आकृष्ट करने के लिए संविधान में रखे जाते हैं। ये राज्य के लिए एक तरह के आदेश होते हैं पर इनका पालन करना या न करना बिल्कुल राज्य की मर्जी पर निर्भर है। राज्य के लिए इन आदेशों का अर्थ इतना ही है कि जब सरकार अपना नीति-निर्धारण करे और उसे कार्यान्वित करने के लिए कानून बनाये उसे कानूनों को यथासंभव इन तत्वों के आधार पर बनाने का प्रयास किया जाए। यह सरकार का कर्तव्य हो जाता है कि वह इन तत्वों को बराबर ध्यान में रखे। संविधान में नीति-निर्देशक तत्वों का यही उपयोगिता है। इन्हे उस संविधान द्वारा स्वीकृत राज्य के लिए कतिपय सुनिश्चित आदर्श भी मान सकते हैं। इन आदर्शों की उपलब्धि राज्य सरकार को सफलता में निहित होगी।

राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों को निम्न भागो में बाँटा जा सकता है:—

1 आर्थिक व्यवस्था संबंधी तत्व:- आर्थिक व्यवस्था से संबंधित निर्देशक तत्वों का एकमात्र उद्देश्य है भारत में समाजवादी प्रजातंत्र राज्य की स्थापना करना। संविधान में समाजवाद शब्द का कहीं प्रयोग नहीं हुआ था, इसके बावजूद निम्नलिखित

सिद्धांतों का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ समाजवादी प्रजातंत्र की स्थापना करना ही प्रमुख उद्देश्य है :-

पहली बात यह है कि राज्य के सभी नागरिकों को जीविका के साधन प्राप्त करने का समान अवसर दिया गया है। कोई आदमी बेकार न रहे। इसके बाद भी प्रत्येक राज्य का यह कर्त्तव्य है कि बेकारी और भूखमरी को मिटने की कोशिश करे।

दूसरी बात यह है कि भौतिक सम्पत्ति का बँटवारा इस तरह से हो कि जिसमें सारे समाज का कल्याण संभव हो सके। देश की सम्पत्ति पर सबका अधिकार होना चाहिए। ऐसा न हो कि सारे की सारी सम्पत्ति मुट्ठीभर पूँजीपतियों के हाथों में जाकर सिमट जाए।

तीसरी बात यह है कि समाज की आर्थिक नीति इस तरह की हो जिससे देश के धन और उत्पादन के साधनों का ऐसा केन्द्रीकरण न हो जाए। अतः धन और उत्पादन के साधनों को लाभ से हानि नहो।

चौथी बात यह है कि पुरुषों और स्त्रियों को समान कार्यों के लिए समान वेतन मिलना चाहिए।

पाँचवी बात यह है कि पुरुषों और स्त्रियों तथा सुकुमार बच्चों के स्वास्थ्य और शक्ति की रक्षा की व्यवस्था हो। स्त्रियों तथा बच्चों को खतरनाक काम में नहीं लगाया जाय क्योंकि खतरनाक कार्यों के करने से उनकी सुकुमारता समाप्त हो जाती है, उनके स्वास्थ्य गिर जाते हैं। उनके साथ ही अस्वस्थ औरतों की सन्तान भी अस्वस्थ ही होगी है।

By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani



## वर्ण व्यवस्था (varna system)

वर्ण शब्द संस्कृत की 'वृ' धातु से निकला है जिसका शाब्दिक अर्थ वरण करना या चुनना होता है। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में चारों वर्णों की उत्पत्ति विराट पुरुष के चार अंगों से मानी गई है:-

ब्राह्मणोऽस्य मुख मासीद बाहू राजन्यः कृतः
ऊरूतदस्य यदवैश्यः पदभ्यां शूद्रोऽजायत ॥

अर्थात विराट पुरुष (ईश्वर) के मुख से ब्राह्मण, बाहु से क्षत्रिय, जंघा से वैश्य एवं पैरों से शूद्र वर्ण की उत्पत्ति हुई है।

महाभारत के शांति-पर्व के 188वें अध्याय के दसवें श्लोक में वर्णों की उत्पत्ति ब्रह्मा से इस प्रकार बतायी है:-

ब्रह्मणां तु सितो क्षत्रियाणां तु लोहितः।
वैश्याणां पीत को वर्ण शूद्रणामसितस्पतथा ॥

अर्थात ब्रह्मा ने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र वर्ण की उत्पत्ति की जिनके रंग क्रमशः श्वेत लोहित पीला तथा काला था।

प्रारम्भ में वर्ण व्यवस्था का आधार कर्म था। ब्राह्मणों ने इसे पुख्ता आधार देने के लिए इसे दैविय विधान बताया ताकि इस व्यवस्था को दैविय मानकर लोग अपना नियत कर्म करते रहे। ब्राह्मण का कार्य कर्मकाण्ड सम्पन्न कराना था। राजा क्षत्रिय होता था जिसका कार्य रक्षा करना था। वैश्य का कार्य व्यापार था। इन तीनों वर्णों को सम्मिलित रूप से द्विज कहा जाता था। शूद्र वर्ण का कार्य इन तीनों वर्णों द्विज की सेवा करना था। कालान्तर में यह व्यवस्था कर्म के स्थान पर जन्म पर

महाभारत के आदिपर्व के 130वें अध्याय के 31 से 60 तक के श्लोकों में एकलव्य की कथा इस प्रकार वर्णित है:-

द्रोणाचार्य के पास एक बार निषादराज हिरण्यधनु का पुत्र एकलव्य धनुर्विद्या सीखने आया। निम्न वर्ण के कारण उन्होंने शिष्य नहीं बनाया। दृढ़ इच्छा के धनी एकलव्य ने वन में गुरु द्रोण की एक मिट्टी की प्रतिमा बनाई और अभ्यासरत हो गया। एकबार एक कुत्ता एकलव्य का काला रंग देखकर उस पर भौंकने लगा। एकलव्य ने बाणों से उसका मुख भरकर भौंकना बंद करवा दिया। पाण्डवों ने देखा कि कुत्ते के मुँह में खरोंच नहीं आयी और उसका मुख बंद है। उन्होंने महान धनुर्धर की खोज की। एकलव्य ने द्रोण के शिष्य के रूप में अपना परिचय दिया। अर्जुन ने द्रोण से कहा आपने तो आशीर्वाद दिया था पृथ्वी पर तुम सबसे धनुर्धर रहोगे। आपका शिष्य एकलव्य तो मुझसे श्रेष्ठ है। तब गुरु द्रोण ने गुरु दक्षिणा में एकलव्य का अंगूठा माँग लिया। एकलव्य ने अपना सहर्ष अंगूठा काटकर दे दिया। अब अर्जुन ही श्रेष्ठ धनुर्धर रहा।

इसी प्रकार रंगभूमि में सूत-पुत्र कर्ण अर्जुन से द्वन्द्व युद्ध के लिए आता है तब कृपाचार्य उससे कहते हैं, कर्ण पहले अपने कुल का परिचय देना होगा क्योंकि राजकुमार नीच कुल के लोगों से युद्ध नहीं करते। जब पता चलता है कि वह सूतपुत्र है तब भीम कर्ण से कहता है - अरे ओ सूतपुत्र तू तो अर्जुन के हाथ मरने योग्य भी नहीं है। तुझे तो शीघ्र ही चाबुक हाथ में ले लेना चाहिए क्योंकि यही तेरे कुल के अनुरूप है।